सत्यमेव जयते

संयुक्ता

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चंडीगढ़

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

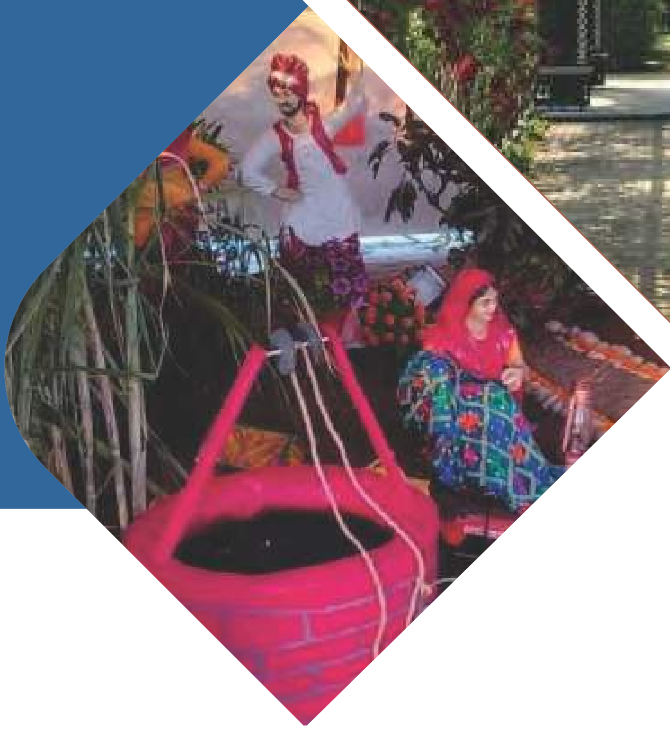

2023-24

अंक दसवां

गार्डन ऑफ फ्रेगरैंस, सेक्टर 36, चंडीगढ़

रोज़ गार्डन, सेक्टर 16, चंडीगढ़

संपादकीय मंडल

- प्रधान संरक्षक – श्री के. एस. रामुवालिया, प्रधान निदेशक
- मुख्य संरक्षक – श्री रमेश कुमार शर्मा, निदेशक, प्रशासन

- मुख्य संपादक – श्रीमती अमृत पाल कौर, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
- सह संपादक – श्रीमती रश्मि महाजन, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
- सह संपादक – श्री मिनेश कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
- संकलन व प्रूफ रीडिंग – श्री प्रवीण कुमार झा, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

- अंक – दसवां (ई–पत्रिका)
- प्रकाशक – कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), चंडीगढ़

टिप्पणी

पत्रिका में छपी रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों के अपने विचार है। संयुक्ता परिवार का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है। रचनाओं की मौलिकता, उसमे प्रस्तुत तथ्यों तथा आंकड़ों की प्रमाणिकता के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी है।

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	संदेश	पृष्ठ सं.
1	प्रधान संरक्षक का संदेश	1
2	महानिदेशक (रक्षा सेवाएं) चंडीगढ़ का संदेश	2
3	प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) हरियाणा का संदेश	3
4	प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) हरियाणा का संदेश	4
5	प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) पंजाब का संदेश	5
6	प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) पंजाब एवं यू.टी. चंडीगढ़ का संदेश	6
7	मुख्य संरक्षक का संदेश	7
8	संपादकीय	8
9	रचनाऐं	9

10वें अंक में प्रकाशित की जानी वाली रचनाओं का ब्यौरा

क्रम संख्या	शीर्षक	श्री / सुश्री / श्रीमती	पृष्ठ
1	अगर मैं एक पेड़ होती	चाहत सुपुत्री श्री शिव शरण, स.ले.प.अ.	10
2	बेटा नहीं बेटी हुई	शिव शरण, स.ले.प.अ.	11
3	तन्हा जीना मुश्किल है	मुनीष भाटिया, व.ले.प.अ.	12
4	मन दर्पण का प्रतिबिम्ब है, अभिव्यक्ति में हमारे शब्दों का चयन	मुनीष भाटिया, व.ले.प.अ.	13-15
5	मानव चरित्र	मुनीष भाटिया, व.ले.प.अ.	16
6	एक्यूप्रेशर एक विधा	विजय कुमार अधलखा, स.ले.प.अ.	17-19
7	वर्तमान में रहना सीख	विजय कुमार अधलखा, स.ले.प.अ.	20
8	किस्मत	संजना वर्मा, आशुलिपिक – II	21
9	बेटी	संजना वर्मा, आशुलिपिक – II	22
10	क्या मनुष्य को शाकाहारी होना चाहिए?	सुदेश कुमार, सहायक पर्यवेक्षक	23
11	पिता की स्मृति में	आमोद दीक्षित, स.ले.प.अ.	24-25
12	प्रयास	अमृत पाल कौर, व.ले.प.अ.	29
13	मातृभाषा राजभाषा या जन की भाषा	अमृत पाल कौर, व.ले.प.अ.	30
14	बीच गाँव में (नवगीत)	सुनील कुमार, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	31
15	माता–पिता	रामपाल सिंह मौर्या, ले.प.	32
16	मेरा व्यक्तित्व	पंकज सिंह, लेखापरीक्षक	33
17	मैं एक इंसान हूँ	अमृत पाल कौर, व.ले.प.अ., (वाणिज्य)	34
18	हॉकी का विस्मृत जादूगर– पद्मश्री शंकर लक्ष्मण डाबला	रमेश खटक, स.ले.प.अ.	35-37
19	यात्रा वृतांत (मनाली)	मिनेश कुमार, स.ले.प.अ.	38
20	चंडीगढ़ शहर	मिनेश कुमार, स.ले.प.अ.	39

प्रधान संरक्षक का संदेश

यह अत्यंत हर्ष एवं गौरव का विषय है कि कार्यालय की राजभाषा पत्रिका 'संयुक्ता' के दसवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। इस अवसर पर 'संयुक्ता' परिवार के सभी रचनाकार एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं जिनके सफल प्रयासों ने हिन्दी ज्ञान को साकार रूप देते हुए पाठकों की रुचि अनुरूप अपनी कृतियों एवं अभिव्यक्तियों को समेटने का प्रयास किया है।

हिंदी पत्रिकाएँ राजभाषा हिंदी का प्रचार – प्रसार करने तथा कार्यालय के कार्मिकों की सृजनात्मक प्रतिभाओं को मुखरित होने के लिए सशक्त मंच प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसके साथ ही ये पत्रिकाएँ कार्यालय की सांस्कृतिक गतिविधियों एवं विभागीय कार्यकलापों से भी अवगत कराती रही है ।

मैं आशा करता हूँ कि यह पत्रिका निरंतर अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर रहेगी और राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देकर अपने कर्तव्य का निर्वहन करती रहेगी ।

पत्रिका की निरंतर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

के. एस. रामुवालिया
प्रधान निदेशक

संदेश

यह हर्ष का विषय है कि आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "संयुक्ता" के 10वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। इस अंक के प्रकाशन हेतु इस संदेश को लिखते हुए मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है।

यह अत्यंत सुखद अनुभूति है कि हिंदी के प्रचार–प्रसार के साथ हिंदी पत्रिका "संयुक्ता" अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रचनात्मक प्रवृत्ति को बढ़ावा देने के साथ–साथ अपने अनुभव, मनोभाव एवं विचारों को अभिव्यक्त करने का सुअवसर प्रदान करती है। मुझे विश्वास है कि पत्रिका "संयुक्ता" के माध्यम से अधिकारियों एवं कर्मचारियों को न केवल अपनी प्रतिभा निखारने का अवसर प्राप्त होगा अपितु उन्हें हिंदी में अधिकारिक कार्य करने की प्रेरणा भी मिलेगी।

मुझे आशा है कि प्रशासनिक एवं साहित्यिक आभा को समेटे हुए इस हिंदी पत्रिका "संयुक्ता" का यह अंक भी उत्कृष्ट एवं पठनीय होगा।

हिंदी पत्रिका "संयुक्ता' के इस अंक के सफल प्रकाशन हेतु मेरी शुभकामनाएं।

संजीव गोयल
महानिदेशक लेखापरीक्षा
(रक्षा सेवाएं), चंडीगढ़

संदेश

यह प्रसन्नता का विषय है कि प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चंडीगढ़ कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी की गृह पत्रिका "संयुक्ता" के 10वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। राजभाषा हिंदी के विकास एवं प्रचार–प्रसार के लिए यह प्रशंसनीय है।

राजभाषा पत्रिका, कार्मिकों की लेखन क्षमता ,शैली एवं कौशल को प्रोत्साहित करती है। पत्रिका में गुणवत्तापूर्ण, प्रासंगिक तथा विविध विषय पर आधारित रचनाएँ इसका परिचायक है कि कार्यालय के कार्मिक पत्रिका को सुदृढ़ करने में अपना सराहनीय योगदान दे रहे है। मुझे आशा ही नहीं वरन् पूर्ण विश्वास है कि भारत सरकार की राजभाषा निति के कार्यान्वयन एवं हिंदी के प्रचार–प्रसार में पत्रिका "संयुक्ता" सहायक सिद्ध होगी ।

पत्रिका में सहयोग करने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल ,राजभाषा के प्रति अतुलनीय निष्ठा हेतु बधाई के पात्र हैं ।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य एवं उत्तरोत्तर प्रगति हेतु शुभकामनाएं ।

नवनीत गुप्ता

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
हरियाणा, चंडीगढ़

संदेश

मुझे यह जानकार अत्यंत हर्ष हो रहा है कि कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चंडीगढ़ की हिंदी पत्रिका संयुक्ता के दसवें अंक का प्रकाशन होने जा रहा है।

राजभाषा हिंदी सांस्कृतिक विभिन्नता में एकता का प्रतीक है। हिंदी विभिन्न भाषा भाषियों तथा संस्कृतियों के बीच एक सेतु का कार्य करती है। राजभाषा हिंदी सांस्कृतिक और सामाजिक परम्परा की धनी है और विचारों व भावों की अभिव्यक्ति में पूर्ण सक्षम भी है। यह भारत के जन–जन के मन में बसी भाषा है। अतः हमारा संवैधानिक दायित्व और नैतिक कर्तव्य भी है कि हम हिंदी को अपने अधिकाधिक विभागीय कार्यों की भाषा बनाएं। मुझे विश्वास है कि पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक तथा रचनात्मक भाव सृजन करने में सफल होगी।

पत्रिका के संपादक मंडल, रचनाकारों तथा प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों कर्मचारियों के सफल प्रयासों के लिए हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं ।

शैलेन्द्र विक्रम सिंह
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा, चंडीगढ़

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है कि आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका ''संयुक्ता'' के 10वें अंक का प्रकाशन शीघ्र होने जा रहा है। इस अवसर पर मैं पत्रिका से जुड़े सभी लेखकों तथा संपादक–मंडल के सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई देती हूं जिनके सद्प्रयासों से पत्रिका यहां तक पहुँचने में समर्थ हुई है।

आधुनिक भारत में हिन्दी केवल संवाद की भाषा नहीं अपितु व्यवसाय एवं व्यापार की भी भाषा बन चुकी है। वैश्वीकरण के इस युग में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी भाषा का तेजी से प्रचार–प्रसार हुआ है जिसे वर्तमान में प्रत्यक्ष रुप से देखा जा सकता है।

राजभाषा का संवर्धन और विकास करना हम सबका कर्तव्य है। आपके कार्यालय की पत्रिका "संयुक्ता" का सतत् प्रकाशन राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने की दिशा में प्रशंसनीय प्रयास है।

मुझे विश्वास है कि "संयुक्ता" का यह अंक भी हिन्दी प्रचार और प्रयोग में प्रेरणादायक सिद्ध होगा। "संयुक्ता" पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

नाज़ली जे. शाईन
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
पंजाब, चंडीगढ़

संदेश

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "संयुक्ता" के दसवें अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। इस अवसर पर मैं पत्रिका से जुड़े हुए सभी रचनाकारों, पाठकों और सह–संपादक मंडल को बधाई देता हूँ ।

विभागीय पत्रिकाओं ने हिंदी के प्रचार–प्रसार में एक नया मार्ग प्रशस्त किया है । हिंदी पत्रिकाएं विभाग से जुड़े लोगों को अपने विचार प्रकट करने और हिंदी भाषा को बढ़ावा देने के लिए अवसर प्रदान करती हैं। ये पत्रिकाएं विभिन्न कार्यालयों के मध्य सेतु का कार्य करती हैं, जिससे कार्यालयों में होने वाली गतिविधियों की समय–समय पर जानकारी मिलती रहती है। हिंदी न केवल सरकारी कामकाज की भाषा है बल्कि पूरे देश में विचार प्रस्तुत करने का सबसे सशक्त माध्यम है ।

"संयुक्ता" पत्रिका के उत्कृष्ट संपादन एवं सफल प्रकाशन हेतु पत्रिका परिवार से जुड़े सभी सदस्यों को पुनःशुभकामनाएं देता हूँ और पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ ।

तेग सिंह
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं. हकदारी)
पंजाब एवं यू.टी. चंडीगढ़

मुख्य संरक्षक का संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि कार्यालय की हिंदी पत्रिका "संयुक्ता" के दसवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है और मुझे इससे जुड़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। विभागीय पत्रिकाएँ राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रही हैं। इन पत्रिकाओं के माध्यम से कार्यालय में हिंदी में कार्य करने के वातावरण तैयार करने में सहायता एवं प्रेरणा मिलती है तथा पत्रिका "संयुक्ता' भी इस दिशा में प्रयासरत है।

मुझे आशा है कि पत्रिका कार्यालय की रचनात्मक प्रतिभाओं को उजागर करने एवं हिंदी के प्रचार–प्रसार के साथ–साथ कार्यालय की विभिन्न गतिविधियों से अवगत करवाने में भी विशेष भूमिका निभाएगी ।

अंत में "संयुक्ता" से जुड़े सभी रचनाकारों तथा संपादन सहयोगियों को बधाई देते हुए पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

रमेश कुमार शर्मा
निदेशक (प्रशासन)

संपादकीय

एक बार जब भगवान बुद्ध से उनके शिष्यों ने पूछा कि उनके उपदेशों और शिक्षा का प्रचार–प्रसार किस भाषा में किया जाना चाहिए तो भगवान बुद्ध का उत्तर था जहाँ से वो संबंध रखते हों वहां की मातृभाषा में और इसका परिणाम यह हुआ कि बौद्ध धर्म सिर्फ भारत तक सीमित नहीं रहा बल्कि विश्व के कोने– कोने में फैल गया , यह है मातृभाषा की ताकत ।

स्वतंत्रता के 78 वर्षों के बाद भी लोगों में यह भ्रम फैलाया गया है कि हमारी हिंदी वैज्ञानिक विकास का भार उठाने में असमर्थ है जबकि वास्तविकता यह है कि वर्तमान वैज्ञानिक उपलब्धियों के लिए हिंदी का उपयोग एक सशक्त माध्यम है। इसके अतिरिक्त यह बहुत ध्यान देने योग्य विषय है कि मातृभाषा के प्रति उदासीनता हमारे अस्तित्व के लिए आत्मघाती है ।

संयुक्ता पत्रिका के दसवें अंक को आप सबके सामने प्रस्तुत करते हुए बहुत खुशी हो रही है। पत्रिका का हरेक अंक हिंदी के प्रसार की ओर हमारा एक सुदृढ़ कदम है। राजभाषा हिंदी के प्रति सकारात्मक माहौल तथा रचनात्मक प्रतिभाओं को मंच प्रदान करने के उद्देश्य से संयुक्ता का प्रकाशन शुरू किया गया था। भाषा का स्थान जीवन में सर्वोपरि है, इसके बिना हम अपने अस्तित्व, व्यक्तित्व एवं प्रगति की कल्पना भी नहीं कर सकते।

भाषा ही हमारी सामाजिक सांस्कृतिक अस्मिता का माध्यम है। भाषा के जरिये ही हमारी पहचान और ऐतिहासिक स्मृतियाँ सुरक्षित रहती हैं। हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा ही नहीं अपितु पूरे देश को एक सूत्र में बांधने वाला धागा व सुलभ साधन भी है, जो विभिन्न प्रान्तों को मोतियों की तरह आपस में पिरोकर एक सुन्दर माला बनाती है। "संयुक्ता" पत्रिका में संकलित सभी रचनाओं में बहुत ही सहज एवं सरल हिंदी का प्रयोग हुआ है ताकि आम जन इन लेखों को आसानी से समझ सकें। राजभाषा हिंदी के विकास में यह पत्रिका एक छोटा सा पर हमारे लिए महत्वपूर्ण प्रयास है।

अंत में, मैं 'संयुक्ता' परिवार से संबंधित सभी लेखकों, पाठकों, संपादन सहयोगियों का धन्यवाद करते हुए भविष्य में भी उनके सक्रिय सहयोग का अनुरोध करती हूँ आप सभी के विचार तथा सम्मतियों की प्रतीक्षा में.....

अमृतपाल कौर
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

आलेख
कहानियां
एवं कविताएँ

अगर मैं एक पेड़ होती

चाहत सुपुत्री श्री शिव शरण,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
का. प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) हरियाणा, चंडीगढ़

अगर मैं एक पेड़ होती,
अपनी हरियाली देख बहुत खुश होती,
खुले आसमान तले,
चैन की नींद सोती,
अगर मैं एक पेड़ होती

कड़कती धूप में छांव का आँचल बनती,
तेज बारिश में बेघर का सहारा बनती,
अगर मैं एक पेड़ होती,

असहाय को सहारा देती,
भटके हुए को रास्ते का किनारा देती,
विपत्ति आने पर इशारा देती,
अगर मैं एक पेड़ होती,

अपने फलों से सबका पेट भरती,
अपने फूलों से सबका घर सजाती,
अपनी खुशबु से हर आँगन महकाती,
अगर मैं एक पेड़ होती,

जिनका आँगन महकाया,
वही जब कुल्हाड़ी लाते,
तो मैं खूब रोती,
अपने अंत पर बहुत निराश होती,
अगर मैं एक पेड़ होती,
फिर भी मैं चुप रहती ,
अगर मैं एक पेड़ होती,

बेटा नहीं बेटी हुई

श्री शिव शरण,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
का. प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) हरियाणा, चंडीगढ़

हमारे देश के बहुसंख्यक परिवार में माता–पिता बेटी को कहते हैं कि तू हमारी बेटी नहीं बेटा है। यहाँ तक की बेटी भी ये सुनकर खुश होती है ,गर्व महसूस करती है कि मैंने आज आपका बेटा बनकर दिखा दिया ।

आज हर क्षेत्र में बेटियां आगे निकलती जा रही हैं और बेटों को पीछे छोड़ते जा रहीं हैं। हर वो काम जो बेटे कर सकते हैं वो बेटियां भी कर रहीं हैं । बेटी की अपनी एक अलग पहचान व वजूद है । बेटी किसी भी काम को कुछ साबित करने के लिए नहीं कर रहीं है कि "देखों मैं भी किसी बेटे से कम नहीं " मैं आपकी बेटी हूँ और आपकी बेटी ही कहलाना चाहती हूँ। बेटी को बेटा कहकर उसका वजूद ,सम्मान और उसकी पहचान मत छीने ।

बेटी हमारी शान और मान है जो कि हजारों में एक है । माता–पिता व अन्य जो प्रशंसा करना चाहते तो हैं, और करते भी हैं, लेकिन ' बेटी नहीं बेटा है तू तो" कहकर दबी हुई तुलना वाली सोच को कहीं न कहीं सामने ले आते हैं। उनके लिए कहना चाहूँगा कि जैसे बेटा बेटी नहीं बन सकता उसी तरह बेटी भी बेटा नहीं बन सकती। उसे बेटी ही रहने दिया जाए।

"जरूरी नहीं रोशनी चिरागों से ही हो ,
बेटियां भी घर में उजाला करती हैं ।।

तन्हा जीना मुश्किल है..

श्री मुनीष भाटिया,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
का. प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चंडीगढ़

शब्दों से खेलते अक्सर,
हम चांद में अपने
महबूब का अक्स
देखते रहे और वो,
जज्बातों के सौदागर बन
हवा के साथ चलते बने
है जग की डगर कठिन बहुत,
तन्हा जीना अब मुश्किल है ।

बेशक मौसम के जैसे,
बदलना फितरत ना थी हमारी
फिर भी बेरुखे मेघों से
बरसात की उम्मीद
रखी फिजूल ही जीवन में,
खुद को ही बदलना होगा अब
है जग की डगर कठिन बहुत,
संग जीने की ख्वाहिश अब है ।

दिल में नाम तेरा उकेरें है,
थोड़ी तेरी वफाई से
रहमत की बरसात
भी हो जाती मुमकिन,
देख दोस्त मुड़के इकबार
राह में है बेताब कोई
इस जग की डगर कठिन बहुत,
अब तो हँसते हँसते जीना है।

मन दर्पण का प्रतिबिम्ब है, अभिव्यक्ति में हमारे शब्दों का चयन

श्री मुनीष भाटिया,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
का. प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चंडीगढ़

हमारे शब्दों का चयन और उपयोग हमारे व्यक्तित्व को प्रकट करता है और हमारे सामाजिक संबंधों को प्रभावित करता है। यदि हम अश्लील या गाली जैसे शब्दों का उपयोग करते हैं, तो इससे हमारी संवेदनशीलता और सामाजिक संज्ञान में गिरावट आ सकती है। यह भी दिखाता है कि हमारे व्यवहार में कितनी दुर्बलता है एवं संबंधों को प्रतिबिंबित करने की क्षमता में कमी है। इसलिए, हमें अपने शब्दों का सावधानीपूर्वक चयन करना चाहिए और समाज में समर्थन और समझदारी का परिचय कराना चाहिए। शब्दों का चयन और उपयोग काफी महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि वे हमारे विचारों और व्यवहार पर प्रभाव डालते हैं। जुबान का अच्छा उपयोग करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। जब हम अपनी जुबान का उपयोग जागरूकता और समझ के साथ करते हैं, तो हम समाज में सदाचार, सहनशीलता, और समरसता को प्रोत्साहित करते हैं। इससे हमारे व्यक्तिगत और सामाजिक संबंध मजबूत होते हैं और समृद्धि की दिशा में अग्रसर होते हैं। चुनावी मौसम में जुबान का फिसलना आम हो चला है। जाने अनजाने सनसनी से ओत प्रोत शब्दों का चयन करना और फिर उसे जनता तक पहुंचाना एवं इसको हवा देने का कार्य सत्ता लोलुपता के गणित में उलझी शक्तियों के कारण ही संभव हो सका है। चुनावी मौसम में जुबान का फिसलना समाज में असहजता और विवाद का कारण बन सकता है। इसलिए, हमें सावधानीपूर्वक और समझदारी से अपनी भाषा का उपयोग करना चाहिए ताकि हम सही संदेश को स्पष्टतः संवेदनशीलता और समर्थन के साथ पहुंचा सकें।

आज हम अपना काम निकलवाने की खातिर अपनी जुबान को किसी भी हद तक जाने को तत्पर रहते हैं । यह दुखद है कि कई बार लोग अपने उद्देश्यों के लिए अनैतिक तरीकों का सहारा लेते हैं। फिर चाहे शासन तंत्र में बैठे किसी पद से काम

निकलवाना हो या फिर किसी निजी क्षेत्र में लालसा के वशीभूत होकर अपना मतलब सिद्ध करना हो, जिसमें प्रत्येक वर्ग का व्यक्ति बिना किसी जाति, धर्म, लिंग, भेद के समान रूप से भागीदार होता है। सफलता इस बात पर निर्भर करती है जब आत्म–समर्पण और नैतिकता कभी भी कमजोर ना होने पाए क्योंकि यह व्यक्तिगत और सामाजिक स्थिति को सुरक्षित रखने में मदद करता है। नैतिकता, समर्पण, और साझेदारी के साथ काम करना तभी सुनिश्चित हो सकता है जब समृद्धि और समरसता के मामले में सभी की सामाजिक सहभागिता हो और हमारी जुबान किसी इंसान के लिए तलवार का काम ना करे। इसलिए, हमें अपने शब्दों का सावधानीपूर्वक चयन करना चाहिए और समाज में समर्थन और समझदारी का परिचय कराना चाहिए। आज का बेलगाम मानवीय आचरण समाज में प्रत्येक वर्ग के लोगों में कुत्सित भड़काने के साथ–साथ एक भ्रष्ट वातावरण को उत्पन्न कर रहा हैं। अपनी उदंडता को सफेद जामा पहनाने के लिए अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता जैसे कुतर्कों का सहारा लिया जा रहा है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर लोगों की निजता भी सुरक्षित नहीं रही इस बारे अदालत ने भी मामले को संज्ञान में लिया है और चिंता जाहिर की है। ऐसी स्थिति में, समाज को नैतिकता और सदाचार की प्राथमिकता देना आवश्यक है ताकि समृद्धि और सामाजिक समरसता को बनाए रखने के लिए सही मार्गदर्शन मिल सके। शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों को समाहित करना और समुचित समर्थन प्रदान करना महत्वपूर्ण है ताकि समाज में ईमानदारी, साझेदारी, और न्याय मौजूद रह सके।

भारत जैसे धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र में लोगों का यह दायित्व बनता है कि खुद की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर दूसरे लोगों की स्वतंत्रता का हनन नहीं होना चाहिए। विश्व के विविधा संपन्न महान भारत देश में जहाँ आलोचना और विरोध जनतंत्र का आधार है वहां अन्य धर्मों और जाति के लोगों की आलोचना संयम और अनुशासन के दायरे में होनी चाहिए ताकि सभी लोग अमन चैन के साथ देश में रह सके। किसी भी काम में सफलता प्राप्त करने के लिए मेहनत और प्रतिबद्धता महत्वपूर्ण होती है, लेकिन साथ ही दूसरों के साथ सहयोग और समर्थन भी महत्वपूर्ण हैं। सहयोग और मेहनत से अगर सफलता हासिल करनी हो, तो नैतिकता भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। अनैतिक तत्वों से दूर रहकर सफलता की ऊंचाइयों को हासिल करना सामाजिक संबंधों को भी प्रभावित कर सकता है। अच्छे नैतिक मूल्यों पर आधारित कार्य न केवल व्यक्ति को सफल बनाता है, बल्कि हमारी जुबान से निकले शब्द हमारे आस पास के सामाजिक माहौल को भी सुधार करने में सहायक हो सकते हैं। लोगों को जागरूक रहना और अपनी जुबान से निकले अपने वक्तव्यों के प्रति सतर्क रहना महत्वपूर्ण है, ताकि भ्रष्ट आचरण की प्रक्रिया रोकी जा सके और सद्भावपूर्ण वातावरण बना रह सके।

संयम की कमी और तुच्छ बयानबाजी समाज में नकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं। हमें अच्छे सामाजिक मानकों का पालन करने और एक दूसरे के साथ समर्थन और समझदारी में बढ़ने का प्रयास करना चाहिए, ताकि हिंसा और असहमति की जगह भाईचारा और समरसता हो। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता महत्वपूर्ण है, लेकिन इसे सही रूप से समझना और उपयोग करना भी जरूरी है। निजता की सुरक्षा भी महत्वपूर्ण है, और इसे सावधानीपूर्वक बनाए रखना चाहिए।

पारिवारिक माहौल में उचित मार्गदर्शन और समर्थन सामाजिक सुरक्षा में सुधार एवं सामाजिक तंत्र को समृद्ध करने में मदद कर सकता है। बात–बात पर अनजाने ही अपनी बातों में गाली समान शब्दों का प्रयोग बुरा प्रभाव डालता है। इसलिए जिह्वा को प्रदूषित होने से बचाने के लिए पारिवारिक माहौल का सहयोग भी उसे समृद्धि की दिशा में आगे ले जा सकता है। पारिवारिक माहौल एक शक्तिशाली संसाधन होता है जो व्यक्ति को उन्हें सहज और सकारात्मक रूप में स्वीकार करने में मदद कर सकता है। यहाँ तक कि यदि कोई व्यक्ति अशोभनीय भाषा या अपशब्दों का प्रयोग करता है, तो पारिवारिक समुदाय की सहायता से वह इस बुरी आदत से मुक्ति प्राप्त कर सकता है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता भारत में जन्मसिद्ध अधिकार है और यह जरूरी है कि दूसरे की भावनाओं का ध्यान भी रखा जाए।

अगर हिन्दुस्तान को सचमुच एक राष्ट्र बनाना है
तो चाहे कोई माने या ना माने, राष्ट्रभाषा तो हिन्दी ही हो सकती है
क्योंकि जो स्थान हिन्दी को प्राप्त है
वह किसी दूसरी भाषा को कभी नहीं मिल सकता।

महात्मा गांधी

मानव चरित्र

श्री मुनीष भाटिया,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
का. प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चंडीगढ़

चरित्र इंसान का
विचित्र हो चला है,
ईश्वर के वजूद पर तो
करता है संदेह,
और इंसान में
इंसानियत की
गैर मौजूदगी पर,
मौन हो रहा है ।
बेशर्मी रगों में
मचल गई चहुँ ओर,
लालच और द्वेष
पनप रहा मानस में,
दिखावे की खातिर,
मचाये वो भी शोर,
स्वयं चक्रव्यूह में
उलझा सा है ।
दु:ख कहने वाले तो
मिल जाते यहाँ,
दौर कुछ आया
खुदगर्जी का भयावह,
दु:ख कोई बांट सके
वो मिलना तो आज,
नामुमकिन सा हो चला है ।
अपनी है डफली सबकी
अपना अपना है राग,
परोपकार का हुआ
अभाव इस कदर,
कर्तव्य से विमुख,
स्वार्थ में खोया मानव,
बेपरवाह रवैये से उसके
डूब रहीं तभी तो उसकी नैया ।

एक्यूप्रेशर एक विधा

श्री विजय कुमार अधलखा,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
का. प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चंडीगढ़

हजारों वर्षों से मनुष्य अपने शरीर में कहीं भी पीड़ा होने पर वहाँ दबाब बनाकर आराम पाने की कोशिश करता आया है। सिर में दर्द होते ही हम अपने हाथों से सिर को दबाने लगते है। एक हाथ में दर्द होते ही अनायास दूसरा हाथ दर्द वाले स्थान तक पहुंच जाता है तथा हम हाथ दबाने लगते हैं। पैरों में दर्द होते ही या तो हम स्वयं अपने पैर दबाने लगते हैं या हमारी इच्छा होने लगती है कि अन्य व्यक्ति हमारे पैर दबा दे। दबाव के माध्यम से आन्तरिक अवयवों को प्रभावित करके शरीर की पीड़ा को कम करने की इसी मनोभावना ने अनेक चिकित्सा पद्धतियों को जन्म दिया जिन्हें हम एक्यूप्रेशर, एक्यूपंचर, आदि नामों से जानते हैं।

एक्यूप्रेशर भारत की एक पुरातन चिकित्सा विधा है। वेदों में इसका वर्णन मिलता है। महाभारत काल में भीष्म पितामह बाणों की शय्या पर सोये तथा उन्होंने इच्छा मृत्यु का वरण किया – यह संदेश भी हमारा ध्यान एक्यूप्रेशर चिकित्सा विधा की ओर आकर्षित करता है ।

पूरे शरीर का उपचार केवल छः बिदुओं पर आधारित है:

माथे से गले तक के सभी रोगों का उपचार।
जैसे सिर दर्द, मुंह में छाले ,आँखों के रोग आदि।

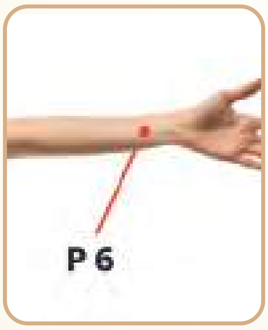

छाती से डायफ्राम तक के सभी रोगों का उपचार,
हृदय का दर्द, उलटी खासी, दमा आदि।

डायफ्राम से नाभि तक के सभी रोगों का उपचार।
जैसे पेट दर्द, भूख का,पाचन क्रिया आदि ।

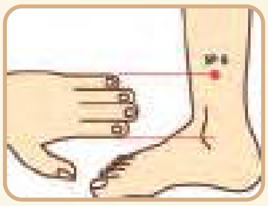

नाभि से नीचे तलपेट तक के सभी रोगों का उपचार ।
जैसे – पेशाब की गड़बड़ी आदि ।

शरीर के पिछले भाग में गर्दन से पीठ तक के
सभी रोगों का उपचार ।

कमर एवं शरीर के नीचे के भाग की कोई
भी तकलीफ, जैसे कमर में दर्द।

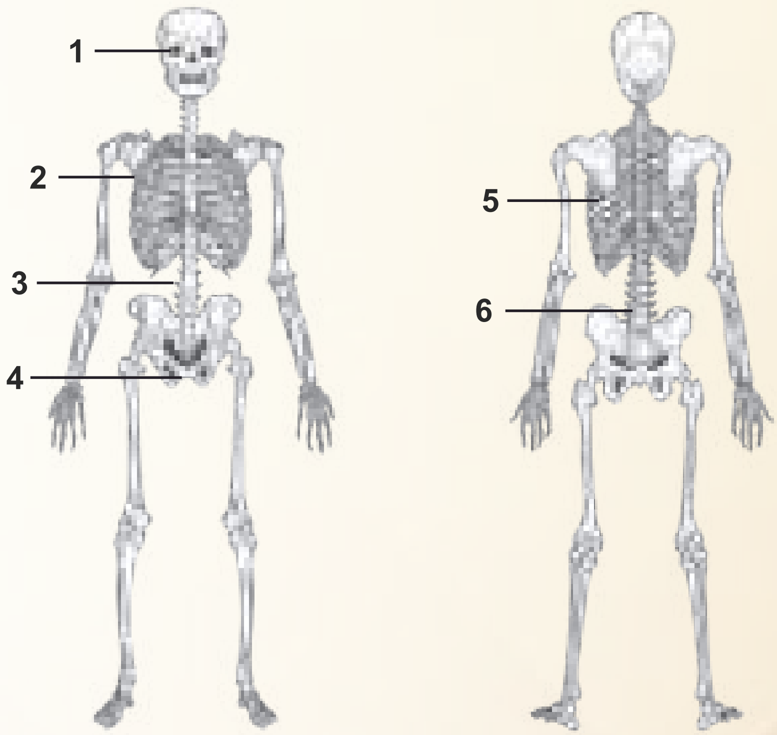

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से मस्तिष्क मेरुदंड तंत्र में ही चेतना के केंद्र अवस्थित हैं। यह तंत्र विद्युतीय उर्जा का ग्रहण केंद्र है एवं इसमें तंत्रिकाओं के माध्यम से प्राण उर्जा संचारित होती है ।

जगत की सम्पूर्ण गतिविधियां सूर्य के इर्द–गिर्द केन्द्रित हैं। उसी प्रकार हमारे शरीर की सम्पूर्ण गतिविधियां चक्रों पर ही केन्द्रित हैं जो की निम्न प्रकार से हैं :–

- सहस्त्रार
- आज्ञा चक्र
- विशुद्धि चक्र
- अनाहत
- मणिपुर
- स्वाधिष्ठान
- मूलाधार

1. चक्र रक्त वाहनियों एवं तंत्रिका तंतुओं के अनुरूप माने गए हैं। रक्त वाहिनी एवं तंत्रिका जाल शरीर के विभिन भागों में आकर मिलतें हैं तथा पुनः विभाजित होकर वितरण कार्य करते हैं। इन चक्रों के माध्यम से किया गया उपचार वास्तव में मस्तिष्क से दिया गया उपचार है।

2. एक्युप्रेशर द्वारा उपचार तंत्रिका तंत्र पर आधारित होने के कारण अत्यंत प्रभावकारी है। सभी नाड़ियों का सम्पूर्ण जाल केवल कुछ चक्रों से नियंत्रित होता है। सभी नाड़ियों में शरीर के मध्य में स्थित सुषुम्ना नाड़ी सर्वाधिक महत्वपूर्ण होती हैं। चक्र, भौतिक एवं मानसिक उर्जा के अंतरण स्थल हैं, जहाँ पर शरीर की भौतिक एवं पराभौतिक उर्जा का मिलन होता है ।

वर्तमान में रहना सीख

श्री विजय कुमार अधलखा,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
का. प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चंडीगढ़

आशा और निराशा के झूले पर लटकी,
मन की गति कभी धीमी,कभी मध्यम ,
कभी पथरीली कभी नरम,
कभी शांत कभी अशांत,

कभी अंधकार कभी प्रकाश,
उलझन में पड़ी ,कैसे नदिया पार से,
परिस्थितियां हर रोज नया पृष्ठ लिखती है,
रिश्तों की मिठास कम करती हुई,
नया उनको परिभाषित करती हैं,
और वक्त पर प्रश्न चिन्ह लगाती है,

जीवन तो बहती धारा है,
आत्मीयता एक सहारा है,
समय न खो– मोह ममता में,
वर्तमान में तू रहना सीख,
बदलते संबंधों को सहना सीख,
गीता के संदेश को हृदय से लगा,
और व्यर्थ के बंधनों से पार जा

किस्मत

सुश्री संजना वर्मा,
आशुलिपिक–II
का. प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चंडीगढ़

कुछ वक्त की मेहरबानी है,
थोड़ी सी किस्मत की मनमानी है ,
पल में क्या हो जाये,किसे पता?
ये जिन्दगी भी बड़ी सयानी है

कुछ लम्हे दीवाने हैं,
कुछ रिश्ते बेगाने हैं,
इस सफर में क्या हो जाए ,किसे पता?
ये नसीब की पहेली भी अनजानी हैं,

थोड़ी खुशियों से मुलाकातें हैं,
कुछ हादसे और सौगातें हैं,
ये समय का चक्र कब थम जाए दोस्त,किसे पता?
कि लकीरों में छुपी कौन सी नई कहानी है

बेटी

सुश्री संजना वर्मा,
आशुलिपिक–II
का. प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चंडीगढ़

हवाओं का रुख बदलने तो दो,
अभी दौड़ूँगी कैसे मुझे पहले चलने तो दो,
अभी तो बहुत कुछ सीखना है मुझे,
जमाने के साथ थोडा संवरने तो दो,
आँधियों से लड़ नही जाउंगी मैं,

मुझे जरा संभलने तो दो ,
चुप रहना मेरी कमजोरी नहीं,
मेरी खामोशी को ज़ुबान में बदलने तो दो,
सीख लूंगी आत्मरक्षा करना भी,
मुझे तूफानों से गुजरने तो दो,
आपकी उम्मीदों पर भी खरी उतरूंगी,
मुझे पहले जनने तो दो,

अभी से कैद क्यों कर रहे हो मुझे पिंजरे में ,
मुझे आजादी की उड़ान भरने तो दो,
शान भी कहलाऊँगी आपकी एक दिन,
मुझे अपनी ज़िन्दगी का हिस्सा बनने तो दो,
अभी दौड़ूँगी कैसे मुझे पहले चलने तो दो,

क्या मनुष्य को शाकाहारी होना चाहिए ?

श्री सुदेश कुमार,
सहायक पर्यवेक्षक
का. प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) पंजाब, चंडीगढ़

शाकाहारी वह व्यक्ति होता है जो मांस नहीं खाता और ज्यादातर पौधों से मिलने वाले पदार्थ खाता है जैसे अनाज,फल, सब्जियां और मेवें । शाकाहारी आहार के कुछ स्वास्थ्य लाभ भी हैं, जैसे रक्तचाप और कोलेस्ट्रोल कम होना, हृदय रोग, मधुमेह और कुछ प्रकार के कैंसर की दर कम होना।

शाकाहारी बनने का फायदा यह ही कि यह आहार फलों,सब्जियों और साबुत अनाजों से भरपूर होने के कारण हृदय के लिए काफी फायदेमंद होता है। शाकाहारी भोजन स्वस्थ एवं खुश रहने का सही तरीका है। एक शाकाहारी डाइट एक सम्पूर्ण आहार है क्योंकि इसमें फाइबर, विटामिन, फोलिक एसिड और मैगनीशियम होता है ।

शाकाहारी भोजन को पकाना भी आसान होता है एवं पकने में भी कम समय लगता है। सब्जियां न केवल हमारे स्वस्थ जीवन के लिये बल्कि पर्यावरण के लिए भी महत्वपूर्ण है। शाकाहारी बनने के लिए सही तरीके का पालन करना भी आवश्यक है। अगर आप मांस नहीं खाते लेकिन प्रोसेस्ड ब्रेड ,पास्ता और ज्यादा चीनी खाते हैं और बहुत कम सब्जियां और फल खाते हैं तो शाकाहारी बनने का कोई फायदा नहीं है ।

मांस और अन्य उत्पादों के उत्पादन से पर्यावरण पर भारी बोझ पडता है। मांस उत्पादन के लिए आवश्यक अनाज के उत्पादन के लिए बड़ी मात्रा में वनों की कटाई होती हैं जिससे कई प्रजतियां विलुप्त हो जाती हैं। अकेले ब्राजील में पशुओं के लिए सोयाबीन उगाने के लिए 5–6 मिलियन एकड़ भूमि का उपयोग किया जाता है, दूसरी ओर शाकाहारी अनाज के लिए काफी कम मात्रा में फसलों और पानी की आवश्यकता होती है। हर साल दुनिया भर के लोग 01 अक्टूबर को विश्व शाकाहारी दिवस के रूप में मनाते हैं। इस दिन को मनाने का उद्देश्य शाकाहारी भोजन के फायदों के प्रति लोगों को जागरूक करना हैं ।

शाकाहारी बनना अपने आहार को बेहतर बनाने का एक शानदार अवसर है। शाकाहारी बनना पर्यावरण प्रभावी बनने का सबसे आसान और सबसे सुखद तरीकों में से एक है ।

पिता की स्मृति में

श्री आमोद दीक्षित,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
का. प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चंडीगढ़

पिता के देहांत के बाद, जीवन का रास्ता एक नया सफर बन जाता है। यह वह समय होता है जब हमें उनकी अनुपस्थिति का सामना करना पड़ता है और साथ ही उनकी यादों और विचारों से नया परिचय होता है। पिता के देहांत के बाद, हर कोई अपनी अपनी प्रकृति में उनकी खोई हुई ममता और संरक्षा की कमी का अहसास करता है।

यह समय जीवन की सख्त शिक्षा भी देता है। हर व्यक्ति को उस विशेष व्यक्ति की यादों के साथ अपने आप को वापस संशोधित करने की जरूरत होती है, जो उनकी मृत्यु के बाद शेष रहती है। यह प्रकिया मन को ताजगी और आत्मा को शांति देती है। पिता की यादो को समर्पित एक अंतर्निहित भावना को व्यक्त करती हुई एक कविता

पिता के विचार अब भी मेरे दिल में बसे है,
उनकी ममता का संदेश हर पल मुझे देते रहते है।

उनकी खोई हुई यादों में धुंधला सा एहसास है,
मेरे जीवन का हर कोना उनकी यादों से भरा है और खास है।

वो पिता की मांग में सजी हुई मेरी बचपन की चादर,
अब भी मेरे जीवन को गहराती है और बढ़ा देती है उनका और भी आदर ।

उनके होने से मिली हर सीख, हर शिक्षा अद्वितीय है,
उनके बिना अब जीने की कल्पना दुखदायी एवं मुश्किल है।

पर उनकी यादों के सहारे जीना सीख लिया है,
क्योंकि वो न सिर्फ मेरे पास हैं, बल्कि मेरी जिन्दगी का अहम् हिस्सा हैं।

पिता की यादों में धीरे–धीरे उनकी मूर्ति बन गई है,
वो हमेशा मेरे साथ हैं, और मेरी आत्मा में बसे हुए हैं।

माता–पिता के प्रति हमारी देखभाल का महत्व उनके जीवन में ही नहीं, बल्कि हमारे जीवन के हर पल में अनमोल है। हमें यह समझना है कि उनकी उपस्थिति और सेवा हमारे लिए विशेष मौका है, जो हमें अपनी शिक्षा और संघर्षों का मूल्य समझाता है। इसलिए, जब तक हमारे माता–पिता हमारे साथ हैं, हमें उनका सम्मान, प्यार और देखभाल करनी चाहिए। इस संदेश के साथ, हमें उनके साथ संयमित और सजीव संबंध बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए, ताकि हम उनके साथी और सहायक बन सकें उनके आगे बढ़ने में।

मैं उन लोगों मे से हूं, जो चाहते हैं और जिनका विचार हैं
कि हिंदी ही भारत की राष्ट्र भाषा हो सकती हैं।

बाल गंगाधर तिलक

स्वतंत्रता दिवस 2024 की कुछ झलकियां

स्वतंत्रता दिवस पर राष्ट्रीय ध्वजारोहण करते हुऐ प्रधान निदेशक

स्वतंत्रता दिवस कार्यक्रमों के आयोजन में कार्यालय के अधिकारी/कर्मचारी एवं उनके परिवार के सदस्य

प्रधान निदेशक अपने विचार रखते हुऐ

स्वतंत्रता दिवस के लिए प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चंडीगढ़ एवं प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) पंजाब एवं यू.टी. चंडीगढ़

स्वतंत्रता दिवस पर कार्यालय के कर्मचारियों के बच्चों की प्रस्तुति

हिन्दी परवाड़ा के दौरान कार्यालय के कर्मचारी

प्रयास

श्रीमती अमृत पाल कौर,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
का. प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चंडीगढ़

वह एक बच्ची थी जिसने बचपन से पाया था कि जीवन की रफ्तार बहुत तेज है। सुबह उठते ही स्कूल की तैयारी और फिर आधा दिन स्कूल में,उसके बाद गृह–कार्य और अपना थोडा ध्यान। पता ही नहीं चला कब दसवीं की परीक्षा पास कर कॉलेज जाना प्रारंभ हुआ, वहां भी वही तेज रफ्तारी छमाही एवं वार्षिक परीक्षाओं की तैयारी, प्रैक्टिकल प्रयोगों के लम्बे सत्र और कब पांच साल और व्यतीत हुए कुछ पता न चला। परन्तु अब आगे जीवन उतना साधारण नजर नहीं आ रहा था। जीवनयापन के लिए कोई नौकरी ढूँढना आवश्यक था परन्तु आजकल नौकरी मिलना और ढूँढना दोनों ही टेढ़ी खीर थे। ऐसे में सोशल मीडिया पर चल रहे बेशुमार विज्ञापनों में कुछ भी सच नहीं प्रतीत होता था। सोशल मीडिया में यूँ तो कई विज्ञापन रहते हैं परन्तु आवेदन देने भर से साइबर क्राइम की दुनिया का ध्यान आ जाता है ऐसे में सारा दिन किंकर्तव्यविमूढ़ता में निकल जाता है ।

तभी उसने सोचा कि क्यूँ न नौकरी की अपेक्षा बिजनेस में हाथ आजमाया जाए परन्तु यहाँ भी धन निवेश की आवश्यकता थी जो कर पाना उसके माँ – बाप के लिए संभव नही था। अब और आगे की सोचना और भी मुश्किल हो जाता। प्रयास करने पर भी सब ओर से निराशा ही हाथ लगती ,फिर घर पर बैठ कर कुछ काम करने की सोची और सोचा कि क्यूँ न छोटे बच्चों को टयूशन दी जाए इससे उसकी पढाई की कीमत पड़ेगी और छोटे बच्चों के दुःख के निवारण में भी मदद हो सकेगी जिससे मानसिक विकास भी होगा। उसके कार्य को पूरा करने में मदद तब मिली जब एक तीसरी कक्षा का बच्चा जिसे केवल व्यक्तिगत ध्यान से पढाया जा सकता था ने तीसरी कक्षा में अच्छे अंक लेकर उतीर्ण की। बस फिर क्या था, ऐसे बच्चों के टयूशन के लिए लाइन लग गई और उसका कार्य सफल हुआ ।

मातृभाषा – राजभाषा या जन की भाषा

श्रीमती अमृत पाल कौर,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
का. प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चंडीगढ़

हिंदी के बारे में दो शब्द लिखने का सुअवसर प्राप्त हुआ। कार्यालय की पत्रिका में हिंदी के संबंध में लिखना अपने आप में गौरव का विषय है। यूँ तो हम जिस धरती पर पैदा हुए हैं ,वहाँ के जनमानस की भाषा ही हमारी मातृभाषा कहलाती है परन्तु हिंदी के विषय में यह बात कितनी सही है, आईये आंकलन करते हैं।

आज के युग में प्रत्येक माँ –बाप अपने बच्चों को अंग्रेज़ी माध्यम के स्कूल से पढाना चाहते हैं क्योंकि हिंदी मीडियम में पढ़ कर उनकी उन्नति के रास्ते में रुकावट आती है ऐसा माना जाता है। परन्तु यदि सही मायनों में देखा जाए तो हिंदी मीडियम के स्कूलों में पढ़े बच्चे अधिक मेहनती, मानसिक तौर पर अधिक सजग एवं ज्यादा आज्ञाकारी बनते हैं ।

सोशल मीडिया ने आज सभी बच्चों के मानसिक पटल को अपने अधीन कर लिया है। ऐसे में सभी ऐप्स पर अंग्रेज़ी में वार्तालाप होने के कारण भी अंग्रेज़ी टाइपिंग को हिंदी की अपेक्षा अधिक बढ़ावा मिलता है। परन्तु हिंदी को ही अंग्रेज़ी के शब्दों में टाइप कर दिया जाता है। इससे वार्तालाप प्रचलन तो हिंदी में ही हो रहा होता है।

सरकारी विभागों एवं उपक्रमों में भी अधिक से अधिक कार्य हिंदी में ही किए जाने को बढ़ावा दिया जाता है और अब तो वरिष्ठ अधिकारी भी इसका समर्थन करते हैं ।

बीच गॉव में (नवगीत)

श्री सुनील कुमार,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
का. प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चंडीगढ़

बीच गॉव में निपट अकेला ,
सन्नाटे को ढोता घर,
बजे गली में शहनाई तो,
चुपके चुपके रोता घर,

हर दर पर हैं ताले लटके,
भीतों से झड़ती रही,
रोटी खातिर गए थे शहर,
लौटे अब तक नहीं ,

ठंडा चूल्हा खुद को कोसे ,
जब भूखा ये सोता घर,
टूटी खिड़की से रवि किरणें,
घुसती है जब भी छनकर,

एक अँधेरा तभी यकायक,
आगे आता है तनकर,
धूप रहे या खिली चांदनी,
रहता है डर बोता घर,

पीले पट गिरा–गिरा कर,
पेड तोड़ता खामोशी,
हवा बुहारे ना अब आगंन,
समझे अपनी नामुसी,
हाल स्वयं का देखा कभी तो,
अपना आपा खोता घर

माता–पिता

श्री रामपाल मौर्या,
लेखापरीक्षक
का. प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चंडीगढ़

माता–पिता हमारे जीवन के सबसे महत्वपूर्ण और प्रिय व्यक्तियों में से होते हैं। वें न केवल जन्म देते हैं अपितु हमारे जीवन के हर चरण में हमारा मार्गदर्शन करते हैं। माता–पिता अपने बच्चों के लिए कितनी मुश्किलों का सामना करते हैं। बड़े– बड़े विद्वानों ने एवं श्रुतियों में यह कहा गया है कि जो व्यक्ति अपने माता–पिता की सेवा नहीं करते उनका जीवन व्यर्थ है। माता –पिता की सेवा से बढ़कर संसार में कुछ भी नहीं है। जिस व्यक्ति ने इन दोनों की सेवा कर ली उसका जीवन सफलता की ओर अग्रसर होता जाता है एवं उसके सभी मनोरथों की पूर्ति होती जाती है। माता –पिता का अमीर या गरीब होने से ज्यादा महत्वपूर्ण माता – पिता का साथ होना हैं ।

हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा तो है ही, यही
जनतंत्रात्मक भारत में राजभाषा भी होगी।
सी. राजगोपालाचारी

मेरा व्यक्तित्व

श्री पंकज सिंह,
लेखापरीक्षक
का. प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चंडीगढ़

जो हूँ नहीं वह दिखाने की,
कोशिश भी क्यूँ करूँ,
हैं फिकर रिश्तों की तो,
मुश्किलें खड़ी करके,
उलझाने की कोशिश भी क्या करूँ,
जो नहीं हूँ वह दिखाने की
कोशिश भी क्या करूँ,

किताबों के पन्नों की तरह पलट,
रहा हूँ जिन्दगी के पलों को,
क्यूँ न कुछ नया करने की
कोशिश करूँ
जो नहीं हूँ वह दिखाने की
कोशिश भी क्या करूँ

सफर चल रहा है दिन और,
रात का क्यूँ न उन्हें हर,
रोज अपनों की खुशियों के
नाम करूँ
जो नहीं हूँ वह दिखाने की
कोशिश भी क्या करूँ

अगर सुलझा नहीं पा रहा शब्दों,
को ही अपने मे तो किसी को उलझाने,
की कोशिश भी क्या करूँ,
थकना नहीं मुझे ये सोच
कर रोज कुछ अलग करने की
कोशिश करूँ जो नहीं हूँ वह दिखाने की
कोशिश भी क्या करूँ

किसी का दर्द अगर अपना सा,
लगता है, तो उसे नकारने,
की कोशिश भी क्यूँ करूँ,
जो नहीं हूँ वह दिखाने की
कोशिश भी क्या करूँ

मैं एक इंसान हूँ"

श्रीमती अमृत पाल कौर,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (वाणिज्य)
का. प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चंडीगढ़

मैं वक्त के साथ गुजरता हूँ,
मैं मौसम जैसे बिगड़ता हूँ,
हँसता हूँ,
उखड़ता हूँ,
मैं कुछ ज्यादा नहीं,
होने को एक इंसान हूँ।

लहरों से भी लड़ता हूँ,
जीने के लिए मरता हूँ,
कभी उम्मीदों से बिछड़ता हूँ,
कभी जोश से उभरता हूँ,
मैं एक इंसान हूँ।

मैं आसमानों की आड़ में,
सही गलत में उलझता हूँ,
सीधी सीधी बीत जाए,
ऐसा कहाँ करता हूँ,
मैं कुछ ज्यादा नहीं,
होने को एक इंसान हूँ!

हम रौशन होंगे अंधेरों में,
आग लगी है दिल ए बसेरे में,
मेहनत का तेल डालते रहो,
बुझे न आग हवा के फेरों से,
रातें भी बदलेंगी सवेरों से,
बस रूक जाना नहीं,
चाहे गुजरना पड़े मुश्किलों के डेरो से,
डरना नहीं,
आखिर में तो जीत हमारी ही होगी अंधेरों से ।

हॉकी का विस्मृत जादूगर
पद्मश्री शंकर लक्ष्मण डाबला

श्री रमेश खटक,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
का. प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चंडीगढ़

मानद कप्तान शंकर लक्ष्मण डाबला जी एक भारतीय हॉकी खिलाड़ी थे जो गोलकीपर के रूप में खेलते थे। पद्मश्री शंकर लक्ष्मण डाबला जी का जन्म 07 जुलाई 1933 को महू (अब अम्बेडकरनगर, म.प्र.) में हुआ। इनका विवाह नीमच (म.प्र.) के स्व. श्री माणकचन्द्र जी मोरवाल की सुपुत्री शान्ति देवी के साथ हुआ । सेना में शामिल होने के बाद उन्होंने फुटबॉल से हॉकी की ओर रुख किया। 1955 में सर्विसेज के लिए खेलते हुए अपने करियर की शुरुआत की। वह 1956, 1960 और 1964 के ओलंपिक में भारतीय टीम का हिस्सा थे जिसने दो स्वर्ण पदक और एक रजत पदक जीता था। वह अंतरराष्ट्रीय हॉकी टीम के कप्तान बनने वाले पहले गोलकीपर थे ।

कुल मिलाकर शंकर लक्ष्मण ने 3 ओलंपिक फाइनल और 3 एशियाई खेलों के फाइनल खेले । ये सभी पाकिस्तान के खिलाफ खेले गए थे। लक्ष्मण ने 1956 व 1964 ओलंपिक और 1966 एशियाड में स्वर्ण पदक जीता और 1960 ओलंपिक और 1958 व 1962 एशियाड में रजत पदक जीता। इन छह फाइनल में से चार में कोई भी पाकिस्तानी उनके खिलाफ गोल नहीं कर सका। शेष दो फाइनल में लक्ष्मण ने तीन गोल खाए। छह फाइनल और केवल तीन गोल किसी भी गोलकीपर के लिए एक अद्भुत रिकॉर्ड के रूप में रैंक किए जाने चाहिए। जब 1966 के एशियाई खेलों में लक्ष्मण को भारतीय हॉकी टीम का कप्तान चुना गया तो वह पहले गोलकीपर थे जिन्हें किसी भी देश की हॉकी टीम का कप्तान बनाया गया था। उनके नेतृत्व में, भारत ने फाइनल में पाकिस्तान को 1–0 से हराकर अपना पहला एशियाई खेलों में स्वर्ण पदक जीता। 1960 ओलंपिक में भारत पाकिस्तान से 1–0 से हार गया ।

1960 ओलंपिक की हार की गूँज टोक्यो ओलंपिक 1964 में सुनी जा सकती थी जहाँ भारतीय हॉकी टीम के जीतने की उम्मीद नहीं थी। कम से कम भारतीय मीडिया के

अनुसार जिसे संदेह था कि क्या पाकिस्तान के प्रभुत्व को देखते हुए स्वर्ण पदक दोबारा हासिल किया जा सकता है। फाइनल में भारत का मुकाबला एक बार फिर पाकिस्तान से हुआ जिसमें भारत ने पाकिस्तान को 1–0 से हराया। शंकर लक्ष्मण को उनकी गोलकीपिंग के लिए मैन ऑफ द मैच घोषित किया गया। उन्होंने 1966 में बैंकॉक में एशियाई खेलों में भारतीय टीम की कप्तानी की और फिर से पाकिस्तान को हराकर स्वर्ण पदक जीता ।

1968 में मेक्सिको ओलंपिक टीम में लक्ष्मण के लिए कोई जगह नहीं थी जिसके कारण उन्होंने संन्यास की घोषणा कर दी। भारत मेक्सिको में फ्लॉप हो गया जिससे उस खेल में देश की गिरावट तय हो गई जिस पर दशकों से उसका दबदबा था। मेक्सिको ओलम्पिक में भारतीय हॉकी टीम के हार के कारण बढती आलोचनाओं के बीच इंडियन हॉकी फेडरेशन ने विवशता में पुनः शंकर लक्ष्मण से सम्पर्क किया लेकिन वे इतने आहत थे कि उन्होंने सपाट मना कर दिया ।

1964 के टोक्यो ओलंपिक स्वर्ण के बाद शंकर लक्ष्मण को अर्जुन पुरस्कार मिला । वह उस वर्ष प्रतिष्ठित अर्जुन पुरस्कार प्राप्त करने के लिए चुनी गई विजयी टीम के एकमात्र खिलाड़ी थे। उस अद्भुत फाइनल में, लक्ष्मण पाकिस्तान के खतरनाक डार को पूरे 70 मिनट तक गोल से दूर रखने में कामयाब रहे थे। 1966 के एशियाई खेलों में स्वर्ण पदक जीतने के बाद शंकर लक्ष्मण को पद्मश्री पुरस्कार मिला। वह भारत द्वारा दोगुना सम्मान पाने वाले एकमात्र हॉकी गोलकीपर हैं।

1968 के बाद शंकर लक्ष्मण ने हॉकी छोड़ दी। वह सेना में बने रहे और 1979 में मराठा लाइट इन्फैंट्री के कप्तान के रूप में सेवानिवृत्त हुए। 2006 में महू में एक पैर में गैंग्रीन से पीड़ित होने के बाद उनकी मृत्यु हो गई। अपने साहसी कारनामों के लिए जाने जाने वाले शंकर के पास तीव्र सजगता और स्थिति निर्धारण की समझ थी जिसने उन्हें एक दशक से अधिक समय तक रक्षा की अंतिम पंक्ति का संरक्षक बने रहने में सक्षम बनाया। मजबूत और हट्टे–कट्टे शंकर लक्ष्मण ने अपने विशिष्ट खेल करियर में अद्वितीय उपलब्धियां प्राप्त कीं।

एक साक्षात्कार में, पूर्व कप्तान गुरबख्श सिंह ने अपने दिवंगत साथी को याद किया: पाकिस्तान के खिलाफ 1964 का ओलंपिक फाइनल अविस्मरणीय था। हम आगे चल रहे थे और पाकिस्तान ने काफी आक्रमण किये लेकिन शंकर ने कुछ चमत्कारिक बचाव किये और अंततः हम जीत गये। उन्हें मैन ऑफ द मैच घोषित किया गया। फाइनल के बाद पाकिस्तान के शेफ–डी–मिशन मेजर जनरल मूसा ने कहा, ‘हमें जोगिंदर और शंकर लक्ष्मण दे दो, हम तुम्हें हरा देंगे।’ यह शंकर को सर्वोत्तम श्रद्धांजलि थी। टोक्यो में कहा

गया था कि शंकर लक्ष्मण जी छोटी हॉकी गेंद को फुटबॉल की तरह देख सकते थे। यह बिल्कुल सच था। तत्कालीन भारतीय हॉकी संघ प्रमुख अश्विनी कुमार का मेजर जनरल मूसा को जवाब था ''तो फिर आपको इन दोनों खिलाड़ियों को पाने के लिए एक और युद्ध छेड़ना होगा।''

गुरबख्श ने बताया कि शंकर टीम बस में चीयरलीडर हुआ करते थे। उन्होंने कहा, वह ''शहीद'' फिल्म का गाना 'वतन की राह में वतन' गाने से शुरुआत करते थे और हम सभी उनके साथ गाते थे। शंकर लक्ष्मण को ''जिब्राल्टर की चट्टान'' कहा जाता था। उन्होंने जो विरासत बनाई, उसे संजोया जाना चाहिए। आखिरकार, वह प्रसिद्धि या मान्यता के लिए नहीं बल्कि खेल के प्रति सच्चे प्यार के लिए खेलते थे। वह इसमें अच्छे थे और भारत को इसका लाभ मिला।

अखण्ड रहेगा राष्ट्र, भागेगी दूर निराशा,
संभव नहीं कल्याण, अपनाये बिन निज–भाषा

यात्रा वृतांत (मनाली)

श्री मिनेश कुमार,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
का. प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा
(केंद्रीय) चंडीगढ़

हिडिंबा देवी मंदिर

मनाली! हिमाचल प्रदेश का यह खूबसूरत शहर अपनी प्राकृतिक सुंदरता, साहसिक गतिविधियों और शांत वातावरण के लिए प्रसिद्ध है। मैंने मनाली की यात्रा की और वहाँ के अनुभव को मैं कभी नहीं भूल सकता।

मनाली पहुँचने पर, मैंने सबसे पहले ब्यास नदी के किनारे स्थित अपने होटल में जाने का फैसला किया। होटल के कमरे से हिमालय की बर्फ से ढकी चोटियों का दृश्य देखते ही मेरा मन प्रफुल्लित हो गया।

अगले दिन, मैंने रोहतांग दर्रे की यात्रा की। यह दर्रा 13,050 फीट की ऊंचाई पर स्थित है और यहाँ से हिमालय की चोटियों का दृश्य अद्भुत है। मैंने वहाँ स्कीइंग और स्नोमोबाइल का आनंद लिया।

इसके बाद, मैंने मनाली के बाजार में घूमने का फैसला किया। वहाँ मैंने हिमाचली हस्तशिल्प और स्थानीय उत्पादों की खरीदारी की। मैंने वहाँ के स्थानीय व्यंजनों का भी स्वाद लिया, जिनमें त्रिमूर्ति दाल और बाबरू के आचार प्रमुख थे।

मनाली से वापस आने से पहले, मैंने वहाँ के प्रसिद्ध हिडिम्बा मंदिर के दर्शन किए। यह मंदिर देवी हिडिम्बा को समर्पित है, जो भीम की पत्नी थीं।

मनाली की यात्रा ने मुझे प्राकृतिक सुंदरता, साहसिक गतिविधियों और शांत वातावरण का अनुभव कराया। मैं वहाँ के लोगों का आतिथ्य और मेहमाननवाजी को कभी नहीं भूल सकता।

चंडीगढ़ "शहर"

रॉक गार्डन

श्री मिनेश कुमार,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
का. प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चंडीगढ़

चंडीगढ़ भारत का एक महत्वपूर्ण शहर है, जो अपनी सुंदरता, शिक्षा और संस्कृति के लिए प्रसिद्ध है। यह शहर पंजाब और हरियाणा राज्यों की राजधानी होने के साथ–साथ एक केंद्र शासित प्रदेश भी है।

चंडीगढ़ की स्थापना 1953 में हुई थी, जब पंजाब की राजधानी लाहौर, पाकिस्तान के हिस्से में चली गई थी। तब भारत सरकार ने एक नए शहर की स्थापना करने का निर्णय लिया, जो पंजाब की राजधानी होगा।

चंडीगढ़ को ली कोर्बूजिए ने डिजाइन किया था, जो एक प्रसिद्ध फ्रांसीसी आर्किटेक्ट थे। उन्होंने शहर को सात खंडों में बांटा, जिनमें प्रशासनिक खंड, व्यावसायिक खंड, शैक्षणिक खंड आदि शामिल हैं।

चंडीगढ़ अपने प्राकृतिक प्रबंधन, स्वच्छता प्रबंधन व सुगम परिवहन के लिए जाना जाता है। यहाँ के निवासी भी यहाँ के विभिन्न प्रकार के सुगम प्रबंधन के आदर्शो के मूल्य को भलीभांति समझते है और उन्हें संजोये रखने का प्रयास करते है। यही कारण है यहाँ रहने वाले लोगो का जीवन बेहद ही खुशहाल व उच्च स्तरीय श्रेणी का है। चंडीगढ़ शहर की कानून व्यवस्था भी बहुत अच्छी है जिस कारण यहाँ अपराध का अनुपात बहुत कम है।

चंडीगढ़ में कई प्रसिद्ध स्थल हैं, जिनमें रॉक गार्डन, रोज गार्डन, सुखना झील और चंडी मंदिर प्रमुख हैं। रॉक गार्डन में रॉक और कांच से बनी मूर्तियाँ और फव्वारे हैं, जबकि रोज गार्डन में विभिन्न प्रकार के गुलाब के पौधे हैं।

चंडीगढ़ की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से सेवा क्षेत्र पर आधारित है, जिसमें आईटी, बैंकिंग और शिक्षा प्रमुख हैं। यह शहर अपनी उच्च जीवन स्तर और शिक्षा के लिए भी जाना जाता है।

चंडीगढ़ एक ऐसा शहर है जिससे आधुनिक भारत के शहरीकरण की परपंरा शुरू हुई। जो अपनी सुंदरता, शिक्षा और संस्कृति के लिए प्रसिद्ध है। यह शहर भारत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और यहाँ के लोगों का जीवन स्तर बहुत उच्च है।

चंडीगढ़ के प्रमुख दर्शनीय स्थल

सुखना झील सेक्टर-1, चंडीगढ़

रॉक गार्डन सेक्टर-1, चंडीगढ़

बर्ड पार्क सेक्टर-1, चंडीगढ़

जैपनीज़ गार्डन सेक्टर-31, चंडीगढ़

ओपन हैण्ड स्मारक सेक्टर-1, चंडीगढ़

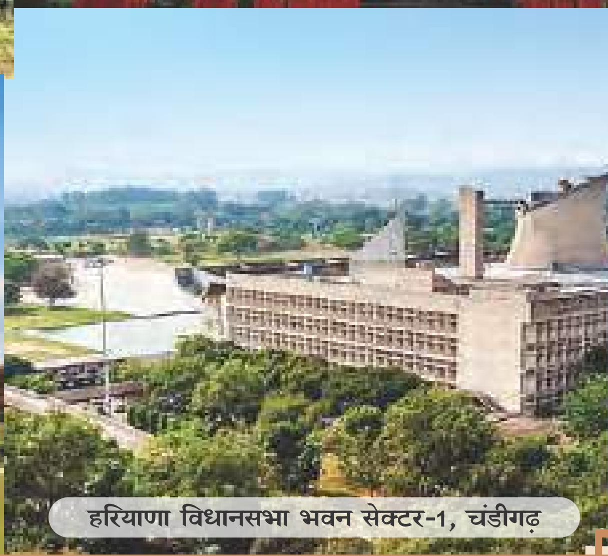

हरियाणा विधानसभा भवन सेक्टर-1, चंडीगढ़

अंक दसवां

संयुक्ता

रोज़ गार्डन सेक्टर–16, चंडीगढ़

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चंडीगढ़
2023-24